12.04.2020

विक्रम सम्वत् २०७७ / Vikram Samvat 2077
भाद्रपद कृष्ण १४ / Bhadrapad Krishna 14
शक सम्वत् १९४२ / Shak Samvat 1942
श्रावण २७ / Shravan 27

सप्ताह ३४ / Week 34
२३१-१३५ / 231-135
मंगलवार / TUESDAY
18

सूर्योदय ५:३२ / Sun Rise 5 : 32
अगस्त / AUGUST
सूर्यास्त ६:२८ / Sun Set 6 : 28

प्रयोगवाद - 1943 से 1953

→ सन् 1943 से 1953 तक के काल खण्ड को आधुनिक हिन्दी कविता में 'प्रयोगवाद' के नाम से जाना जाता है।

→ प्रयोगवाद की कविता का गहरा संबंध कवि 'अज्ञेय' द्वारा संपादित काव्य संग्रह से है।

→ इस काव्य - संग्रह (कविताओं का संग्रह) में अज्ञेय ने सात कवियों की कविताओं का चुना।

↓

और इसे 'तारसप्तक' नाम दिया।

↓

→ प्रकाशन वर्ष 1943

तार सप्तक के कवि

- अज्ञेय
- मुक्तिबोध
- नेमिचन्द्र जैन
- भारत भूषण अग्रवाल
- प्रभाकर माचवे
- गिरिजाकुमार माथुर
- रामविलास शर्मा

सादगी बनाने से नहीं बनती, स्वभाव में होनी चाहिए।
Simplicity can't be affected, it should be ingrained in one's nature.

2020

Scanned by CamScanner

अज्ञेय → इनके एकत्र होने के कारण → वे किसी एक स्कूल के नहीं हैं, किसी मंजिल पर पहुँचे हुए नहीं हैं। राहों के अन्वेषी हैं।

राहों के अन्वेषी
↓
खोजने वाला, Discover

• परंतु इनकी कविताओं में समानता नहीं, विभिन्नता

दूसरा सप्तक - सन 1951 में

कवि – • शकुन्तला माथुर
• भवानी प्रसाद मिश्र
• शमशेर बहादुर सिंह
• नरेश मेहता
• रघुवीर सहाय
• धर्मवीर भारती
• हरिनारायण व्यास

Scanned by CamScanner

राजीव गांधी जयंती

प्रयोगवाद की सामान्य विशेषताएँ / प्रवृत्तियाँ

1. बौद्धिकता → प्रयोगवादी कवि भावुकता के स्थान पर बौद्धिकता को अपनाते हैं।

• डॉ० धर्मवीर भारती के शब्दों में - "प्रयोगवादी कविता में भावना है किंतु हर भावना के आगे प्रश्न-चिह्न लगा हुआ है। इसी प्रश्न चिह्न को बौद्धिकता कह सकते हैं"

अतः इस काव्यधारा में भावना का स्थान बुद्धि या अतिबौद्धिकता ने ले लिया।

2. लघुता की प्रतिष्ठा → प्रयोगवाद में छोटी-से-छोटी चीज को भी महत्व दिया गया। इससे पहले जिन चीजों को कभी कविता का विषय नहीं समझा गया, उन छोटी-छोटी चीजों पर भी कविता लिखी गई जैसे - चूड़ी का 'टुकड़ा'
गरम पकौड़ी
रेडियम की घड़ी
साबरन
'चाय' की प्याली

धैर्य से बहुत काम बनते हैं, अधैर्य से बिगड़ते हैं।

Many things are wrought by patience, even as they are spoilt by impatience.

Scanned by CamScanner

(3) विषय की व्यापकता → प्रयोगवादी कवि अपना संबंध देश - विशेष से ही न रखकर समस्त विश्व से जुड़ना चाहते हैं। वे विषय की किसी परिधि में सीमा में बंधना नहीं चाहते हैं। उन्होंने चींटी से लेकर हिमालय तक सब प्रकार के पदार्थों को अपनी कविता में स्थान दिया।

दैनिक जीवन की सच्चाइयों का भी चित्रण भी इस कविता में मिलता है। इस धारा के कवि नमक, तेल, लकड़ी, बाग की चप्पल, चाय की प्यालियों पर भी कविता लिखते हैं।

(4) नयी भाषा की खोज → प्रयोगवादी कवियों ने कविता के लिए नए विषयों को चुना साथ ही ~~नयी~~ उसके अनुरूप नयी भाषा की भी खोज की —

(1) कविता में प्रयुक्त शब्दों में नया अर्थ भरा।
(2) कविता की भाषा गद्य के निकट आई।
(3) इसमें लघु वाक्यों का प्रयोग होने लगा।
(4) कवि नये प्रयोग की धुन में भूगोल, विज्ञान,

स्वार्थ को जब मनुष्य परमार्थ मानता है, तब सियार को सिंह मानने जैसा है
To mistake selfishness for selfness is like mistaking a jackal

Scanned by CamScanner

मनोविज्ञान आदि के शब्दों का प्रयोग भी बहुत भी प्रचुर मात्रा में करने लगे।
(5) वे जान-बूझकर शब्दों को तोड़ने - मरोड़ने लगे।
(6) भाषा के व्याकरण का अनादर करने लगे।
(7) भाषा को विचित्र बनाने का प्रयास
(8) नये उपमानों का प्रयोग। (मुख के लिए चाँद जैसे) पुराने उपमान उनकी दृष्टि में मैले या व्यर्थ हो चुके हैं नये भावों को व्यक्त करने में असमर्थ -

अज्ञेय - 'अगर मैं तुम को
ललाते साँझ के ~~नभ~~ नभ
की अकेली तारिका अब नहीं कहता,
नहीं कारण की मेरा हृदय उथला या
कि सूना है,
बल्कि केवल यही
ये उपमान मैले पड़ गए
देवता इन प्रतीकों के कर गए हैं कूच
कभी बासन अधिक घिसने से मुलम्मा
छूट जाता है।

नए उपमान - प्यार का ~~बल्ब बल्ब~~ बलब फ्यूज होना,
· मेरे सपने इस तरह टूट गए जैसे भुजा हुआ पापड़'

Scanned by CamScanner

नये उपमानों के प्रयोग से कहीं कविता में नयापन आया और कहीं - कहीं सौंदर्य का ह्रास भी हुआ। नवीनता के नाम कविता कोरी कारीगरी बन गई।

छंद योजना → छंद के बंधन को इन कवियों ने स्वीकार न करके, मुक्तछंद की कविता लिखी।

- इन्होंने लोक - गीतों को भी अपनी कविता का आधार बनाया।
- अंग्रेजी कविता के प्रमुख छंदों, उर्दू की रुबाई का भी प्रभाव।
- कहीं - २ कविता मुक्तछंद के कारण इतनी गद्यमयी की नीरसता आ गई है।

व्यंग्य → ~~नयी~~ आधुनिक नागरिक सभ्यता पर व्यंग्य। (शहरी जीवन पर व्यंग्य)

अज्ञेय की कविता - 'साँप'

'साँप तुम सभ्य तो हुए नहीं, न होगे
नगर में बसना भी तुम्हें नहीं आया
एक बात पूछूँ ! उत्तर दोगे ?
फिर कैसे सीखा डसना
विष कहाँ से पाया ?

अपने को धोखा देने की मनुष्य की शक्ति अजीब है।
Man's capacity for self-deception is amazing.

Scanned by CamScanner

5) यथार्थवाद (सामाजिक सच्चाइयों का चित्रण) →

इन कवियों ने कल्पना के स्थान पर सामाजिक यथार्थ को चित्रण किया।

- समाज के कुरूप, वीभत्स सत्यों का चित्रण भी बिना संकोच के किया।

6) प्रेम → प्रेम के नाम पर मांसल वासना का चित्रण। दमित काम वासनाओं के चित्रण की प्रधानता। फ्रायड का काम-सिद्धांत इनके लिए प्रधान जीवन दर्शन बन गया। अज्ञेय ने तारसप्तक में कहा है – 'आज का मनुष्य यौन-वर्जनाओं का पुंज है' उदाहरण –

'मेरे मन की अंधियारी कोठरी में
अतृप्त आकांक्षाओं की वेश्या बुरी तरह खाँस
रही है'

सत्य के साथ दृढ़ता होनी ही चाहिए।
Truth should always be accompanied by firmness of purpose.

Scanned by CamScanner

प्रेम और वासना का उन्मुक्त चित्रण वास्तव में यौन-कुंठाओं का विस्फोट है जो प्रयोगवादी काव्य में भरा पड़ा है।

7) व्यक्तिगत सुख-दुःख की अभिव्यक्ति → प्रयोगवाद के अधिकतर कवि मध्यवर्ग से हैं इन्होंने काव्य में व्यक्तिगत सुख-दुख की अभिव्यक्ति को ही अपना सत्य माना। ये व्यापक जन-जीवन के अंकन के ओर में न पड़ कर अपने जिए हुए जीवन की पीड़ाओं को व्यक्त करते हैं।

- व्यक्ति के अंतः संघर्षों का वर्णन करते हैं।
- व्यक्ति की स्वतंत्रता ~~से अत्यधिक~~ की सीमा से अधिक मांग।

8) क्षणवाद → क्षण की अनुभूति की अभिव्यक्ति।

- जीवन ~~क्षण में~~ इतिहास में नहीं, क्षण में है।
- मनोविज्ञान ने सिद्ध किया कि हम क्षणों में जीते हैं।
- क्षणों की अनुभूति जीवन में बाध्यक नहीं, साध्यक है।
- क्षणों को सत्य मानकर जीने का अर्थ होता है- जीवन

Scanned by CamScanner

की एक - एक अनुभूति को, एक - एक व्यथा को एक - एक सुख को सत्य मानकर, जीवन को सम्पूर्ण रूप से स्वीकार करना है।

- ~~इन्होंने~~ इनकी मान्यता के अनुसार जीवन का एक आनन्दमय क्षण सम्पूर्ण जीवन से अधिक महत्वपूर्ण है।
- क्षणवादी वर्तमान में जीता है।

अज्ञेय —

'एक क्षण : क्षण में प्रवाहमान
व्याप्त सम्पूर्णता।
इससे कदापि बड़ा नहीं था महाम्बुधि ~~को~~ जो
पिया था अगस्त्य ने
एक क्षण होने का ...'

(10) लघु मानव → जीवन की लघुताओं को स्वीकारना।

लघु मानव का अर्थ है - वह सामान्य मनुष्य जो अपनी सारी हीनता, दुर्बलता और महत्ताओं के बीच यथार्थ है।

Scanned by CamScanner

(11) प्रयोग या नवीन प्रयोग → प्रयोगवादी कवि नवीन प्रयोगों के माध्यम से अपनी प्रतिष्ठा कराना चाहता है। चौकाने की प्रवृत्ति के कारण विचित्रता प्रदर्शन को अपनाया। जिससे कई बार ~~अस्पष्टता~~ कविता में अस्पष्टता भी पैदा हुई।

उदा० —

'अगर कहीं मैं तोता होता।
तो क्या होता ?
तो क्या होता?
तोता होता (आह्लाद से झूमकर) तो तो तो तो ता ता ता ता।
(निश्चय के स्वर में) होता होता होता होता॥

अतः प्रयोगवाद की ~~अति~~ बौद्धिकता और भाषा के चमत्कारी प्रयोगों ने कविता के गौरव को हानि पहुँचायी। प्रयोगवादी कवि शब्दों को प्रचलित अर्थ में ग्रहण करना उचित नहीं समझता। वह शब्द के साधारण अर्थ में विशेष अर्थ भरना चाहता है और इसी प्रयास में वह साधारण अर्थ भी खो बैठता है।

Scanned by CamScanner